आलस्य और अलबेलापन - 53

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा एक बात का फिर से अटेन्शन दिला रहे है **कि वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बापदादा ने हर बच्चे को चाहे प्रवृत्ति में है, चाहे सेवाकेन्द्र पर है, चाहे कहाँ भी रहते हैं, स्थूल साधन हर एक को दिये हैं, ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसके पास खाना, पीना, रहना इसके साधन नहीं हो।**

➳ _ ➳ **जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। अगर कोई को कमी है तो वह उसके अपने अलबेलेपन या आलस्य के कारण है।** बाकी ड्रामानुसार बापदादा जानते हैं कि आवश्यक साधन सबके पास हैं। जो आवश्यक साधन हैं वह तो चलने ही हैं। लेकिन कहाँ-कहाँ आवश्यकता से भी ज्यादा साधन हैं। **साधना कम है और साधन का प्रयोग करना या कराना ज्यादा है।**

➳ _ ➳ **इसलिए बापदादा आज बाप समान बनने के दिवस पर विशेष अन्डरलाइन करा रहे हैं - कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया वह भी बहुत अच्छा किया, अब साधना को बढ़ाना अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना।** ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट घड़ी तक बच्चों को साधन बहुत दिये लेकिन स्वयं साधनों के प्रयोग से दूर रहे। **होते हुए दूर रहना - उसे कहेंगे वैराग्य।**

➳ _ ➳ लेकिन कुछ है ही नहीं और कहे कि हमको तो वैराग्य है, हम तो हैं ही वैरागी, तो वह कैसे होगा। वह तो बात ही अलग है। **सब कुछ होते हुए नॉलेज और विश्व कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष** करने **की भावना से अभी साधनों के बजाए बेहद की वैराग्य वृत्ति हो।**

➳ _ ➳ जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्ठी में पड़े हुए थे। **यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की अभी कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। (18.01.1999)**

➢➢ वर्तमान वायुमंडल के अनुसार मन से दिल से वैराग हो

➳ _ ➳ वैराग

→ **जहां राग का अभाव हो**

→ जहां राग नही है

→ जहां राग समाप्त हो गया है

→ छोटी छोटी कामनायें भी न हो

➽ _ ➽ एक वैराग होता है दुख से उत्पन्न

→ संसार बहुत खराब है

➽ _ ➽ दूसरे वैराग की उत्पति है सुख से

→ सुख है पर पाने के बाद भी इच्छाये तो पूरी हो गयी पर अतृप्ति का भाव है

- सुख पा लिया घर चाहिये
- घर चाहिये मिल तो गया
- फिर भी तृप्तिनही आई

➽ _ ➽ दुख से उत्पन्न हुआ वैराग लम्बा समय नही टिकता है

➽ _ ➽ **सुख से उत्पन्न वैराग लम्बा समय टिकता है**

➽ _ ➽ सब कुछ है फिर वैराग ये एक अलग प्रकार का वैराग है

➽ _ ➽ जिसके पास कुछ है ही नही वो कहे मै वैरागी हूं वो वैरागी नही है

➽ _ ➽ **सब कुछ है पर उससे दूर रहना ये वैराग की परिभाषा है**

➢➢ इच्छायें कामनायें

➽ _ ➽ **जिस जिस व्यक्ति से जब जब कामना रखते तब तब दुख का अनुभव होता है**

→ हम आ रहे है हमारे लिए जगह रखना

- जगह नही रखी तो दुख

→ तुम नीचे जा रहे हो रुकना हम आ रहे है

- हम लेट हो गए वो चले गए तो दुख

→ उधर जा रहे हो हमे भी जाना है

- वो निकल गए तो दुख

→ सेवा है हम जल्दी पहुंच गए

- वो जल्दी नही आए तो दुख

➽ _ ➽ **जहां जहां कामनाये होगी साथ साथ दुख को लेकर आयेगी**

➽ _ ➽ एक दूसरे से बहुत एक्सपेक्टेशन है हमने कभी प्रकट नही की

→ तो वो बहुत दुखी करती है

→ जब तक नाम न मिल जाए तृप्ति नही होती

➽ _ ➽ **सब कुछ होते हुए भी उनसे परे रहना है**

➽ _ ➽ **साधन है पर साधना साधन पर निर्भर न हो जाए**

➽ _ ➽ जितनी जितनी सूक्ष्म कामनाये है हृदय मे वो सभी साधना के मार्ग मे बाधा है

→ सबसे ज्यादा कामना उनसे है जिनके साथ मे काम करते है

→ जो घर गृहस्थी मे साथ रहते है उनसे

→ लौकिक अलौकिक सम्बंधो से

➽ _ ➽ सबसे छोटी छोटी कामनायें है वो कामनायें हमारे दुख का कारण है

➽ _ ➽ **किसी से भी थोडी कामना रखना दुख को आमंत्रण करना है**

➢➢ सब कुछ है परंतु सब से परे

➽ _ ➽ एक ही परिस्थिति बार बार उसी तरह की आती है परंतु हमारी जो स्थिति है वो अलग अलग है

→ जब छोटे थे तो तब जीवन मे कुछ और दुख था

→ तब वही परिस्थिति कुछ ओर ढंग से दिखती थी

- अब ज्ञान मे आने के बाद वही परिस्थिति कुछ और दिखाई देती है

➽ _ ➽ **चेतना का शिखर बहुत ऊंचा है उस तक पहुंचना है**

➽ _ ➽ **जो जो सूक्ष्म कामनाये है इच्छाये है अपेक्षाये है उनको पहचानना व समाप्त करना है**

➽ _ ➽ स्वयं को कितना परिवर्तित किया है उसकी चेकिग करनी है

→ स्वयं स्वयं को देखना और चेंज करना

→ नया दृष्टिकोण हो चीजो को देखने का

→ नया स्वभाव जो पहले नही था

➽ _ ➽ जो वैराग हो वो दुख के कारण नही हो दुखो से सीख कर दुखो को समझ कर हो।

➽ _ ➽ **इस मार्ग पर अकेला ही चलना है** किसी को भी साथ नही लेकर जाना

➽ _ ➽ **ये मार्ग है सम्पूर्ण स्वतंत्रता का**

➽ _ ➽ **सम्पूर्ण स्वतंत्रता ही पवित्रता है**

→ किसी पर निर्भर नही इस मार्ग पर वो चले तो हम चले।

→ मार्ग पर ये साधन मिले तो चले जरूरत नही किसी की

→ इस मार्ग पर ये वैभव मिले तो पुरुषार्थ हो किसी की जरूरत नही

→ देह ठीक हो जाए तो पुरुषार्थ करें

➽ _ ➽ **इस मार्ग पर अकेले ही चलना है। एकला चलो रे**

➽ _ ➽ मार्ग बहुत बडा है समय बहुत कम है।

→ किस किस के लिए रूकेगे हमे किसी के लिए नही रुकना जिसको आना है वो आयेगा

→ जिसको चलना है वो चलेगा

→ पुरुषार्थ करना है वो करेगा

→ जिसकी बुद्धि का ताला जब खुलना है खुलेगा

- हमे तो निकल जाना है
- रुके तो दु ख होगा
- न वो पहुं चपायेगा न हम

→ **हम न रुके तो शायद हमे देखकर वो भी भागने लगेगा।**

➢➢ **राग, वैराग, बेहद का वैराग**

➽ _ ➽ राग

→ केवल राग मिट जाना इतना काफी नही है उसको कुछ और ज्यादा प्राप्ति हो जाए।

→ एक तरफ है गृहस्थी जो विषयों मे डूबा हुआ है

- एक है सब पकडा हु आ है

→ दूसरी तरफ है संयासी जिसने विषयों को छोडा हुआ है

- पर उसका चिं तन करता रहता है मैने ये छोडा ये छोडा...

➽ _ ➽ इन दोनो से ऊपर है बेहद का वैराग

➽ _ ➽ देह भी नही देह के सम्बन्ध भी नही।

➽ _ ➽ जब तक देह की वासनाओ इच्छाओ से ऊपर नही निकल आते इस ज्ञान मार्ग का कुछ भी समझ नही आ सकता।

➽ _ ➽ **वैराग - सब कुछ होते हु ए भी दू र रहना**

➽ _ ➽ **वैराग जो स्वत ही आ जाये करने की आवश्यकता न पडे**

→ **अंदर से जब खाली हो जाते है।**

→ जब ये भाव है कि मैं ये कर रहा हूं तो नही निकलेगा।

→ मै भरा है तो नही निकलेगा।

→ इच्छाये है तो भी नही निकलेगा।

- संसार मे शक्तिशाली कौन है जिसमें ईगो भरा हु आ है।
- बहु त एगरेशन है
- विल पावर ज्यादा है

→ अध्यात्म में शक्तिशाली वो है जिसने स्वयं को खाली कर दिया है।

- मैं नही तू
- मैं नही कर रहा तू कर रहा है।
- **बस निमित समझना**

➽ _ ➽ **संगमयुग पर सब कुछ सारी सेवायें परमात्मा द्वारा हो रही है।**

→ यहां बैठे है उसकी कृपा दया आशीर्वाद है।

→ कोई ये समझे कि मै कर रहा हूं

- तो नीचे गिर जायेगा

- सारा पुरुषार्थ ही समाप्त हो जायेगा।

➳ _ ➳ **जो भी मिला है उसकी देन है**

➳ _ ➳ महानता उस विशेषता की नही है भाव की है।